संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक - ४५ ● ०६ नवम्बर २०१८ कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्दशी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

आर्यों का महाकुम्भ– – डा० धीरज सिंह, सभा प्रधान

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न

दिल्ली के रोहिणी सै० के स्वर्ण जयन्ती पार्क में २५–२८ अक्टूबर २०१८ तक आर्यों का महाकुम्भ भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ जिसका उद्घाटन भारत के महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने किया तथा समापन भारत सरकार के गृहमन्त्री श्री राजनाथ सिंह जी ने किया मध्यकालीन सत्रों में तीन प्रदेशों के राज्यपाल सर्वश्री महामहिम श्री आचार्य वेदव्रत जी हिमाचल प्रदेश, महामहिम श्री गंगा प्रसाद आर्य प्रदेश, म०म० श्री जगदीश मुखी जी मेघालय के अतिरिक्त हरयाणा एवं उ०प्र० के मुख्यमंत्री श्री मोहन लाल की खट्टर एवं श्री योगी आदित्य नाथ जी तथा स्वामी रामदेव जी महाराज आचार्य बालकृष्ण जी हरिद्वार केन्द्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी जी आदि–आदि ने पधार कर सम्मेलन को सफल बनाया वहीं आर्यजगत् के मूर्धन्य सन्यासी सर्वश्री स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा, स्वामी देवव्रत जी दिल्ली, स्वामी प्रणवानन्द जी दिल्ली, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी करनाल, स्वामी सुमेधानन्द जी सांसद, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी उ०प्र०, स्वामी धर्ममुनि जीबहादुरगढ़, स्वामी विजयपाल जी झज्जर आचार्यों एवं आर्य विद्वानों में मुख्य रूप से आचार्य वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय, आचार्य डा० वेदपाल जी मेरठ, आचार्य प्रशस्य मित्रजी रायबरेली, डा० ज्वलन्त कुमार जी अमेठी, डा० बलवीर जी रोहतक, आचार्य धनञ्जय देहरादून, आचार्य रामपाल जी दिल्ली, आचार्या सुमेधा जी, आचार्या नन्दिता जी, आचार्या पवित्रा विद्यालंकार, आचार्य सत्यानन्द जी वेद वागीश, आचार्य आनन्द जी, आचार्य विश्वानन्द जी, आचार्य दिनेश जी, आचार्य सुधीर कुमार जी, सत्यवीर शास्त्री प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीरदलहरयाणा के संचालक उम्मेद सिंह उ०प्र० के समर सिंह आर्य प्रत्येक प्रदेश की प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान–मंत्री कोषाध्यक्ष के अतिरिक्त आर्य जन भारी संख्या में उपस्थित थे प्रत्येक कार्यक्रम प्रभावशाली रहा। संयोजन करने के लिए मुख्यरूप से विनय आर्य, विनय विद्यालंकार राजेन्द्र विद्यालंकार, प्रकाश आर्य महामन्त्री सार्वदेशिक सभा रहे। स्वागताध्यक्ष श्री म० धर्मपाल जी आर्य प्रत्येक सभाएवं कार्यक्रम में उपस्थित रहे धर्मपाल आर्य कार्यक्रम के मुख्य संयोजक रहे तथा अध्यक्षता सुरेश चन्द्र आर्य सभा प्रधान ने की प्रत्येक सत्र की अध्यक्षता के लिए पृथक–पृथक महानुभाव निश्चित थे लेकिन उसका प्रकाशन तथा नामावली उपलब्ध नहीं हो पाई अतः उनका

शेष पृष्ठ ७ पर

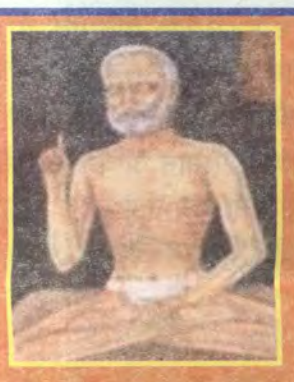

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0

5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ

की ओर से समस्त आर्य समाजों एवं आर्य जनों को

प्रकाश पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकानाऐं

डॉ0 धीरज सिंह
प्रधान–आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री–आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

अरविन्द कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष–आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

महर्षि दयानन्द का बलिदान स्मरण करें

आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान दिवस आ रहा है हमें उसे स्मरण करके संकल्प लेना है आपमें से कुछ लोग कह सकते हैं कि इसे प्रमाण अथवा निर्वाण कहना चाहिए। बलिदान तो स्वामी श्रद्धानन्द जी एवं पं० लेखराम जी आर्य पथिक का हुआ था इसी सन्दर्भ में मेरा सविनय साग्रह निवेदन हे कि बलिदान तीर–तलवार–चाकू–भाला –गोली से ही नहीं जीवन के समापन हेतु गुरू अरस्तु को जहर का प्याला पिलाया था। हमारे गुरूवर को षड्यन्त्र करके पाचक के माध्यम से दूध में जहर काँच पीसकर मिलाकर पिलाया था जो अत्यन्त ही भयंकर था डा० लिखते है कि यदि कोई सामान्य पुरूष होता तो ५ मिनट भी जीवित नहीं रह सकता था और वे १ महीना से भी ऊपर जीवित रहे तथा इच्छा मृत्यु का वरदान था उसे पूरा करते हुए दीपावली के दिन की मानों प्रतीक्षा ही कर रहे थे। मुखमण्डल की आभा–आत्मा विश्वास ईश्वर विश्वास का सम्बल लिये ऐसा प्रतीत हो रहा था कि इन्हें कोई भी कष्ट नहीं है जब कि पूरे शरीर पर फफोले स्पष्ट दिखाई दे रहे थे परन्तु मुख मलीन नहीं था प्रसन्नता से सभी भक्तों को आशीर्वाद दे रहे थे षड्यन्त्र में पौराणिक साधु, हिन्दु नेता, मुस्लिम नेता, मुस्लिम डाक्टर अलीमर्दान खाँ– नन्हीजन वेश्या, राजपरिवार के कार्मचारी पाचक जगन्नाथ, अंग्रेज सरकार के अधिकारी और कर्मचारी एक लम्बे समय से प्रयासरत थे कि किसी भी प्रकार लोगों की आंख के सामने से उनके दर्शन अदर्शन हो जायें जो राजा के फटकार लगाने के बाद सक्रिय हो गए तथा अग्नि पर घी का कार्य प्रारम्भ हो गया। सभी विरोधी ग्रुप संगठित होते गए और चक्रव्यूह की रचना कर डाली उसमें सारे महारथी एक ओर तथा दूसरी ओर अकेला अभिमन्युवीर की तरह सिंह दहाड़ रहा है कि हे राजन् तुम सिंह होकर कुतियां से स्नेह करते हो। जो कदापि शोभनीय नहीं है। सिंह होता तो तत्काल प्रभाव से मेहता अमीचन्द्र की तरह क्षमा याचना करके जीवन सुधार लेता कीचड़ में जाकर गिर गया और आजीवन कलंक का टीका अथवा युगों–युगों तक जोधपुर नरेश राजा जसवन्त सिंह कलंकित हो गए चिकित्सा के नाम पर एक मुस्लिम डाक्टर अलीमर्दान खाँ को भेज दिया स्वयं दर्शनार्थ नहीं आये ४० दस्त प्रतिदिनि होने लगे कारण यह था कि प्रतिदिन औषधियों के नाम पर जहर ही देते रहे। इस बात की पुष्टी स्वयं महर्षि जी उस समय करते हैं जब आबू पर्वत पर आजमेर जाने समय एक वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहे थे स्वामी जी को डॉ० श्री लक्ष्मणदास जी ने औषधि पिलाई थी उस समय सहसा उनके मुख से निकला था कि आज मुझे किसी ने अमृत पिलाया है और आँखे खोलकर डॉ० जी को धन्यवाद दिया था वह डॉ० भी प्रसन्न हुआ और स्वामी जी की सेवा करने लगा वह अजमेर में सरकारी अस्पताल में डाक्टर थे उन्होंने अवकाश ले लिया तो सरकारी अंग्रेज अधिकारियों ने अवकाश स्वीकृत नहीं किया तब उन्होंने त्याग पत्र भिजवा दिया था लेकिन त्यागपत्र भी स्वीकृत नहीं किया गया। इससे स्पष्ट होता है कि अंग्रेज सरकार का षड्यन्त्र में पूरा हिस्सा था फिर डॉ० महोदय ने निवेदन किया कि महाराज आप सीधे अजमेर ही आ जावे मैं प्रातः–सायं समय निकालकर आपकी चिकित्सा अजमेर में ही करूंगा यह कारण था स्वामी जी का अजमेर में अन्तिम प्रवास करने का भिनाय की कोठी, परोपकारिणी सभा, ऋषि उद्यान जो भी कुछ आज वहां पर संस्थान चल रहे हैं स्वामी जी के अमर बलिदान के बाद ही उनके आदर्श एवं विचारों को पूर्ति करने की भावनाओं का ही संकल्प है।

ऐसे अवसर पर उनका स्मरण करना प्रत्येक आर्य का नैतिक कर्तव्य है। यह हमारे जीवन के दीपक को ऊर्जा देगा 'अग्नियाय अग्नि समिध्यते'' ''अप्प दीपोभव'' हम स्वयं दीप बनें और अपने द्वरा अन्य दीपों को भी प्रज्जविलत कर दीपमाला बनायें जो आर्य समाज रूपी वाटिका के अन्धेरे से प्रकाश में आलस्य से ऊर्जा, अभाव से भावों की पूर्ति करते हुए उनके जीवन दीप से हवन कुण्ड की यज्ञाग्नि को प्रज्जवलित करें लोग को बतावें कि महर्षि का सन्देश वेदों की शिक्षाओं द्वारा संसार में ज्ञान प्रकाश करना था। उसे आपको पूरा करना है तभी हम विश्वास पूर्वक कह सकेगें–

असतो मा सद्गमय–तमसो मो ज्योर्तिगमय–मृत्यो मा अमृंतम गमय ।

प्रभो हमें ऐसी शक्ति प्रदान करो। ओ३म् शान्ति, शान्ति शान्तिः

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ सप्तमसमुल्लासारम्भः

प्रश्न- ब्रह्म के सत्, चित्, आनन्द और जीव के अस्ति, भाति, प्रियरूप से एकता होती है। फिर क्यों खण्डन करते हो?

उत्तर- किंचित साधर्म्य मिलने से एकता नहीं हो सकती। जैसे पृथिवी जड़, दृश्य है वैसे जल और अग्नि आदि भी जड़ और दृश्य हैं, इतने से एकता नहीं होती। इनमें वैधर्म्य भेदकारक अर्थात् विरूद्ध धर्म जैसे गन्ध, रूक्षता, काठिन्य आदि गुण पृथिवी और रस द्रवत्व कोमलत्वादि धर्म जल और रूप दाहकत्वादि धर्म अग्नि के होने से एकता नहीं। जैसे मनुष्य और कीड़ी आंख से देखते, मुख से खाते, पग से चलते हैं तथापि मनुष्य की आकृति दो पग और कीड़ी की आकृति अनेक पग आदि भिन्न होने से एकता नहीं होती। वैसे परमेश्वर के अनन्त ज्ञान, आनन्द, बल, क्रिया, निर्भ्रान्तित्व और व्यापकता जीव से और जीव के अल्पज्ञान, अल्पबल, अल्पस्वरूप, सब भ्रान्तित्व और परिच्छिन्नतादि गुण ब्रह्म से भिन्न होने से जीव और परमेश्वर एक नहीं। क्योंकि इनका स्वरूप भी (परमेश्वर अतिसूक्ष्म और जीव उससे कुछ स्थूल होने से) भिन्न है।

प्रश्न- अथोदरमन्तरं कुरूते, अथ तस्य भयं भवति। द्वितीयाद्वै भयं भवति।। यह बृहदारण्यक का वचन है।

जो ब्रह्म और जीव में थोड़ा भी भेद करता है। उसको भय प्राप्त होता है, क्योंकि दूसरे ही से भय होता है।

उत्तर- इसका अर्थ यह नहीं है किन्तु जो जीव परमेश्वर का निषेध वा किसी एक देश, काल में परिच्छिन्न परमात्मा को माने वा उसकी आज्ञा और गुण, कर्म, स्वभाव से विरूद्ध होवे अथवा किसी दूसरे मनुष्य से वैर करे उसको भय प्राप्त होता है। क्योंकि द्वितीय बुद्धि अर्थात् ईश्वर का मुझसे कुछ सम्बन्ध नहीं तथा किसी मनुष्य से कहै कि तुझको मैं कुछ नहीं समझता, तू मेरा कुछ भी नहीं कर सकता वा किसी की हानि करता और दुःख देता जाय तो उसको उनसे भय होता है। और सब प्रकार का अविरोध हो तो वे एक कहाते हैं। जैसे संसार में कहते हैं कि देवदत्त, यज्ञदत्त और विष्णुमित्र एक है अर्थात् अविरूद्ध हैं। विरोध न रहने से सुख और विरोध से दुःख प्राप्त होता है।

प्रश्न- ब्रह्म और जीव की सदा एकता अनेकता रहती है वा कभी दोनों मिलके एक भी होते हैं वा नहीं?

उत्तर- अभी इसके पूर्व कुछ उत्तर दे दिया है परन्तु साधर्म्य अन्वयभाव से एकता होती है। जैसे आकाश से मूर्त्त द्रव्य जड़त्व होने से और कभी पृथक् न रहने से एकता और आकाश के विभु, सूक्ष्म, अरूप, अनन्त आदि गुण और मूर्त्त के परिच्छिन्न दृश्यत्व आदि वैधर्म्य से भेद होता है। अर्थात् अवकाश के बिना मूर्त्त द्रव्य कभी नहीं रह सकता और व्यतिरेक अर्थात् स्वरूप से भिन्न होने से पृथक्ता है। वैसे ब्रह्म के व्यापक होने से जीव और पृथिवी आदि द्रव्य उससे अलग नहीं रहते और स्वरूप से एक भी नहीं होते। जैसे घर के बनाने के पूर्व भिन्न-भिन्न देश में मिट्टी, लकड़ी और लोहा आदि पदार्थ आकाश में ही रहते हैं। जब घर बन गया तब भी आकाश में हैं और जब वह नष्ट हो गया अर्थात् उस घर के सब अवयव भिन्न-भिन्न देश में प्राप्त हो गये, तब भी आकश में हैं। अर्थात् तीन एक थे, है और होंगे। इसी प्रकार जीव तथा सब संसार के पदार्थ परमेश्वर में व्याप्य होने से परमात्मा से तीनों कालों में भिन्न और स्वरूप भिन्न होने से एक कभी नहीं होते।

आजकल के वेदान्तियों की दृष्टि काणे पुरूष के समान अन्वय की ओर पड़के व्यतिरेकभाव से छूट विरूद्ध हो गई है। कोई भी ऐसा द्रव्य नहीं है कि जिसमें सगुण-निर्गुणता, अन्वय-व्यतिरेक, साधर्म्य-वैधर्म्य और विशेष्य-विशेषण भाव न हो।

प्रश्न- परमेश्वर सगुण है वा निर्गुण?

उत्तर- दोनों प्रकार है।

प्रश्न- भला एक मियान में दो तलवार कभी नहीं रह सकती हैं। एक पदार्थ में सगुणता और निर्गुणता कैसे रह सकती हैं?

उत्तर- जैसे जड़ के रूपादि गुण हैं और चेतन के ज्ञानादि गुण जड़ में नहीं हैं। वैसे चेतन में इच्छादि गुण हैं और रूपादि जड़ के गुण नहीं हैं। इसलिये 'यद्गुणैस्सह वर्त्तमानं तत्सगुणम्', गुणेभ्यो यन्निर्गतं पृथग्भूतं तन्निर्गुणम्' जो गुणों से सहित वह सगुण और जो गुणों से रहित वह निर्गुण कहाता है। अपने-अपने स्वाभाविक गुणों से सहित और दूसरे विरोधी के गुणों से रहित होने से सब पदार्थ, सगुण और निर्गुण हैं। कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं है कि जिस में केवल निगुर्णता वा केवल सगुणता हो किन्तु एक ही में सगुणता और निर्गुणता सदा रहती हैं। वैसे ही परमेश्वर अपने अनन्त ज्ञान बलादि गुणों से सहित होने से सगुण रूपादि जड़ के तथा द्वेषादि जीव के गुणों से पृथक होने से निर्गुण कहाता है।

— क्रमशः

समाज की उन्नति केवल वैदिक शिक्षा से

- डॉ. विजेन्द्र पाल सिंह
गली नं. –२ चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा
मो०– ८६७६७६४७१५

आर्य समाज राष्ट्रोत्थान व आर्य समाज की उन्नति हेतु निरंतर प्रयासरत है। महर्षि दयानन्द के हम ऋणी हैं, जिन्होंने देश का गौरव प्राप्त कराने का मार्ग हमें बता दिया। भारत ऐसा देश है जहाँ संसार को श्रेष्ठ बनाने का ज्ञान है, मानवता का ज्ञान है। आर्य समाज ने देश में बढ़ रही कुरीतियों, बुराईयों को दूर करने का कार्य किया है। बाल विवाह, सती प्रथा, मूर्ति पूजा, कब्र मजारों की पूजा, अस्पृश्यता, पर्दा प्रथा, नारी शिक्षा पर जागृति उत्पन्न की। भारत में विधर्मी लोग भारतीयों का मत परिवर्तन कर रहे थे उसके लिए शुद्धि को गति प्रदान की अब भी चारों ओर अशिक्षा, बलात्कार, अपराध, अनैतिकता, दुराचार, मादकता, पाश्चात्यता, साम्प्रदायिकता फैली हुई है एक ओर बेटी बचाओ अभियान चलाया जा रहा है दूसरी ओर बेटियों की दहेज हेतु हत्याऐं हो रही हैं। गला घोट कर जलाकर, विष देकर, प्रताड़ित कर, यातनाऐं देकर मारी जा रही हैं। मृतक श्राद्ध जादू टोना, तांत्रिक कर्म व गुरूडमवाद आज भी बढ़ रहा है हमें इन सभी विषयों पर तेजी से कार्य करना है।

शिक्षा की स्थिति आज विस्फोटक हो रही है। शिक्षा में सांप्रदायिकता पसर रही है तभी तो जे.एन.यू. या ए.म.यू. आदि से आज़ादी की आवाजें उठ रही हैं। हमें अब शिक्षा की ओर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए। शिक्षा पर शिकंजा कसना आवश्यक है। विद्यार्थियों, छात्र छात्राओं का क्या अर्थ है, विचारणीय है यह। कोई बुर्का में, कोई अर्धनग्न परिधान में कोई गोल टोपी में, कोई टाई वेल्ट में! क्या शिक्षा में विद्यार्थियों की इस प्रकार की साम्प्रदायिक पहचान होनी चाहिए।

पुस्तकों को देखिए तो कन्वैंट विद्यालयों में प्रत्येक कक्षा में भिन्न–भिन्न पुस्तकें, भिन्न–भिन्न लेखक, विषय भी ऐसे जिनसे न देश का ज्ञान, न *इतिहास का, ज्ञान न भूगोल का, न ही हमारे महान्* पूर्वजों का ज्ञान मिलता है। ऐसे विद्यालय अंग्रेजियत का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं भारतीयता का नहीं।

कहीं मदरसे, कहीं कैथोलिक, कहीं मैथोडिस्ट, कहीं फ्रांसिसी, कहीं जर्मनी कल्वर से परिपूर्ण कान्वैण्ट स्कूल कुकुर मुत्तों की भांति मत सम्प्रदाय की शिक्षा को महत्व दे अपना व्यवसाय चला रहे हैं। आधुनिक स्कूलों का शिक्षा व प्रवेश शुल्क हजारों से लाखों में होता है जो सामान्य व मध्यम वर्गीय की सीमा से बाहर होता है अतः भारत में गरीब की अलग शिक्षा मध्यम वर्ग की अलग उच्च धनाट्यों की अलग शिक्षा है जहाँ शिक्षा ही अनेक वर्गों में बंटी हो शिक्षार्थियों का क्या होगा? नैतिक व चरित्र निर्माण की शिक्षा तो है ही नहीं। आज की शिक्षा हाय! हैलो! टाटा! बाय! बाय! की शिक्षा है। वाल्यावस्था से ही माँ, ममी, आंटी, अंकल, डैड, डैडी के शब्द बच्चे के मस्तिष्क में घर कर लेते हैं। चरणस्पर्श का तो नाम ही नहीं नमस्ते कहने में भी संकोच करते हैं और बच्चों को विद्यालयों में ब्याय फ्रैंड बनाना सिखया जाता है आगे भी शादी से पहले शादी के बाद भी फ्रैंडशिप का सिलसिला चलता रहता है। कैसे बनेंगे ऐसे बच्चे राम, कृष्ण सीता गार्गी मदालसा? कैसे बनेंगे ऐसे बच्चे मातृ–पितृ भक्त! यही कारण है कि ऐसी शिक्षा प्राप्त सज्जन विदेशों में अथाह धनार्जन व प्रमादयुक्त जीवन जीने हेतु चले जाते हैं या देश में भी रहते हैं परंतु बूढ़े माता–पिता घरों में अकेले कष्ट झेल रहे होते हैं।

कान्वेंट या मैकाले की शिक्षा भौतिकवादी शिक्षा है जहाँ न नैतिकता है, न आचरण, न ईश्वर है न मानवता, उन्हें केवल दिखायी देता है अपना और अपना प्रमादयुक्त जीवन, काकटेल, रेस्तरां बार, फाइव स्टार होटल शाम को एट पी एम अर्थात **8 PM**।

भारत की संस्कृति विश्व की महानतम संस्कृति है जहाँ विश्व के उपकार की भावना है, मानवता की भावना है, चरित्र निर्माण है, नैतिकता है। *माता–पिता गुरु, वृद्ध व महापुरुषों हेतु समर्पित हमारा* इतिहास गौरवशाली इतिहास रहा है जहाँ मात्र शक्ति का सम्मान रहा है, महिलाओं की रक्षा की गई है। राष्ट्र भक्ति इस शिक्षा का उद्देश्य रहा है। ऐसी शिक्षा पूरे भारत में लागू होनी चाहिए और एक समान शिक्षा हो, गुरूकुल जैसी हो जहां गौतम, कणाद, चाणक्य, विदुर जैसे निडर तेजस्वी ओजस्वी विद्वान हों।

वैदिक शिक्षा व्यवस्था से यह निश्चित है कि जहाँ अर्जुन, भीम, कृष्ण, गार्गी, सीता जैसे ब्रह्मचारी व सन्नारियाँ देवियाँ होंगी न कहीं से आतंकवाद की खबर आएगी न आज़ादी की न बलात्कारियों की। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात हमें तुरंत शिक्षा व्यवस्था पर ध्यान देना चाहिए था। अभी भी देर नहीं हुई। आइए आज ही इस विषय पर विचार करें। हमारे देश में जो अराजकता साम्प्रदायिकता तोड़–फोड़ हो रही है, वह पाश्चात्य शिक्षा का ही परिणाम है। लूटपाट, बलात्कार इसीलिए हो रहे हैं क्योंकि हमने वाल्यावस्था से विभिन्न सम्प्रदाय, फिरकों समुदायों में शिक्षा को बांट दिया फिर राष्ट्र एकता कहाँ से आएगी।

स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी भाई परमानन्द (सन् १९२०) ने अण्डमान की जेल से रिहा होने पर लिखा था– "ऐतिहासिक रिकॉर्डों के अध्ययन से मुझे विश्वास हो गया है कि इस शिक्षा पद्धति का उद्देश्य है कि देश के लोगों के अंदर से राष्ट्रीय भावना, देशभक्ति, और राष्ट्रीय प्रेम मिटा कर उन्हें अंग्रोजी भाषा और पश्चिमी सभ्यता की नकल करने वाला बनाया जाए।

हमारे कांन्तिकारियों का यही स्वपन था कि पाश्चात्य शिक्षा पद्धति समाप्त हो। हमारी शिक्षा थी *गुरुकुल व आश्रम वाली जहाँ ब्रह्मचर्याश्रम का पूरा* पालन होता था। आइये देश बचाना है और उन्नति की ओर ले जाना है तो भारतीय वैदिक शिक्षा को अपनाऐं। आएइ चलें वेदों की ओर।

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से

- वेदप्रकाश शास्त्री

यज्ञ शब्द यज् धातु से सिद्ध होता है। जिसका अर्थ है–देवपूजा, संगतिकरण और दान। संसार के सभी श्रेष्ठकर्म यज्ञ कहे जाते हैं। यज्ञ को अग्निहोत्र, देवयज्ञ, होम, हवन, भी कहते हैं।

यज्ञ की महिमा का वर्णन करते हुए महर्षि दयानन्द कहते हैं– "सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्ध युक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुःख, और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य, और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है। जहां होम होता है, वहां से दूर में स्थित पुरुष को नासिका से जैसे सुगन्ध का ग्रहण होता है, वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने से ही समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होके, फैल के, वायु के साथ दूर देश में जाकर, दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है। अग्निहोत्र से वायु, वृष्टि,जल की *शुद्धि होकर, औषधियां शुद्ध होती हैं।* शुद्ध वायु का श्वास स्पर्श, खानपान से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ता है। इसको 'देवयज्ञ' भी कहते हैं क्योंकि यह वायु आदि पदार्थों को दिव्य कर देता है।"

परोपकार की सर्वोत्तम विधि हमें यज्ञ से सीखनी चाहिए। जो हवन सामग्री की आहुति दी जाती है, उसकी सुगन्धि वायु द्वारा अनेक प्राणियों तक पहुंचती है। वे उसकी सुगन्ध से आनन्द अनुभव करती है। यज्ञकर्ता भी अपने सत्कर्म से सुख अनुभव करता है। सुगन्धि प्राप्त करने वाले व्यक्ति याज्ञिक को नहीं जानते और न ही याज्ञिक उन्हें जानता है। फिर भी परोपकार हो रहा है, वह भी निष्काम। यज्ञ में चार प्रकार के हव्य पदार्थ डाले जाते हैं–

१. सुगन्धित–केशर, अगर, तगर, गुग्गल, कर्पूर, चन्दन, इलायची, लौंग, जायफल, जावित्री आदि।

२. पुष्टिकाराक– घृत, दूध, फल, कन्द, मखाने, अन्न, चावल, जौ, गेहूँ, उड़द आदि।

३. मिष्ट–शक्कर, शहद, छुहारा, किशमिश, दाख आदि।

रोगनाशक–गिलोय, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, मुलहठी, सोंठ, तुलसी आदि औषधियां अर्थात् जड़ीबूटियां भी हवन–सामग्री में डाली जाती हैं।

यज्ञ से रोगाणुओं अर्थात् कृमियों का नाश हो जाता है। ये रोगजनक कृमि पर्वतों, वनों, औषधियों, पशुओं और जलों में रहते हैं, जो हमारे शरीर में अन्न और जल के साथ जाते हैं। मलमूत्र के विसर्जन, पदार्थों के गलने–सड़ने, श्वास प्रश्वास की प्रक्रिया, धूम्रपान, कारखानों, वाहनों, भटठों से निकलने वाला धुआं, संयन्त्रों के पदूषित जल, रसायन तत्त्व एवं अपशिष्ट पदार्थों आदि से फैलने वाले प्रदूषण के लिए मानव स्वयं ही उत्तरदायी है। अतः उसका निवारण करना भी उसी का कर्त्तव्य है।

वस्तुतः पर्यावरण को शुद्ध बनाने का एक मात्र उपाय यज्ञ है। यज्ञ प्रकृति के निकट रहने का साधन है। रोग–नाशक औषधियों से यज्ञ रोगनिवारण वातावरण, को प्रदूषण से मुक्त करके स्वस्थ्य रहने में सहायक होता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने भी परीक्षण करके यज्ञ द्वारा वायु की शुद्धि को देखकर रोग निवारक की इस वैदिक मान्यता को स्वीकार किया है।

प्रायः लोगों का विचार है कि यज्ञ में डाले गये घृत आदि पदार्थ व्यर्थ ही चले जाते हैं। परन्तु उनका यह विचार ठीक नहीं है। विज्ञान के सिद्धान्त के अनुसार कोई भी पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता अपितु उसका रूप बदलता है। यथा–बर्फ पिघल कर जल रूप में बदलना, जल का वाष्प रूप में बदल कर उड़ जाना। रूप बदलने का अर्थ नष्ट होना नहीं, बल्कि अवस्था परिवर्तन है। बस, यही सिद्धान्त यज्ञ पर भी चरितार्थ होता है। यज्ञ में डाले गए पदार्थ सूक्ष्म होकर आकाश में पहुंच जाते हैं। यज्ञ में पौष्टिक, सुगन्धित और रोगनाशक औषधियों की हवन सामग्री से दी गई आहुतियों से पर्यावरण की शुद्धि होती है। सभी पदार्थ सूक्ष्म होकर पृथिवी, आकाश, अन्तरिक्ष में जाकर, अन्य जीवजन्तु एवं वनस्पतियां सभी प्रभावित होते हैं।

यज्ञ से शुद्ध हुई जलवायु से उत्पन्न औषधि, अन्न और वनस्पतियां आदि भी शुद्ध एवं निर्दोष होते हैं। वायु, जल आदि जो देव हैं, यज्ञ से शुद्ध हो जाते हैं, आकश मण्डल निर्मल और प्रदूषण मुक्त हो जाता है। यही उन देवताओं का सत्कार है, यही उनकी पूजा है। अग्नि में समर्पित पदार्थ आकाश मण्डल में पहुंच कर मेघ बनकर वर्षा में सहायक होते हैं। वर्षा से अन्न और अन्न से प्रजा की तुष्टि–पुष्टि होती है। इस प्रकार जो अग्निहोत्र करता है, वह मानो प्रजा का पालन करता है।

परमात्मा ने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है परन्तु क्या मनुष्य ने भी परमात्मा को यज्ञ के द्वारा कुछ दिया है? परमात्मा स्वयं वेद में कहता है– देहि में ददामि ते। तुम मुझे दो, मैं तुम्हें देता हूँ।

अतः यज्ञ करते हुए बड़े प्रेम से वेदमन्त्र बोल कर आहुति दो जिससे मन शुद्ध, पवित्र और निर्मल बन जाए। प्रदूषण समाप्त हो जाय। जनता खुशहाल हो। विश्व का कल्याण हो।

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से।
करना हो यज्ञ प्रकट हो जाते हैं अग्नि देव।
डालो शुद्ध पदार्थ यज्ञ में खाते हैं अग्नि देव।।
सबको प्रसाद यज्ञ का पहुंचाते हैं अग्नि देव।
बादल बना के भूमि पर बरसाते हैं अग्नि देव।।
पैदा अनाज होता होता है भगवान् यज्ञ से।
होता है सार्थक वेद का विज्ञान यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान यज्ञ से।
होता है सारे विश्व का कल्याय यज्ञ से।।

फलित ज्योतिष

लेखक-
डा0 बंशी लाल शुक्ल

वेदों के छः अंग हैं– शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छंद, ज्योतिष और व्याकरण। ज्योतिष विद्या द्वारा हम गणितीय आंकलन करके सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि सम्बन्धी घटनाओं (सूर्य–ग्रहण, अंतरिक्ष विज्ञान के रहस्यों, सौर मण्डल के क्रिया–कलापों और अपने ग्रह पृथ्वी पर घटने वाली दैनिक घटनाओं से लेकर दीर्घकालीन परिवर्तनों/प्रभावों का ज्ञान भी इसी ज्योतिष ज्योतिष विद्या से मिलता है।

जैसे ही गणित–ज्योतिष की आड़ में फलित ज्योतिष का प्रभाव बढ़ा, हमारे अधःपतन और पराभव की सामग्री तैयार हो गयी। महमूद गजनबी का १७ बार भारत पर आक्रमण और सोमनाथ मंदिर की लूट मूर्तिपूजा एवं फलित ज्योतिष की दुःखद परिणति है।

आज फलित ज्योतिष का इतना प्रभाव है कि बिना मुहूर्त गृह–प्रवेश, शिलान्यास, दूकान का उद्घाटन, विवाह, मुण्डन आदि कार्य नहीं होते। फिर भी आजकल मृत्यु, व्यापर में घाटा और तमाम दुर्घनायें होती रहती हैं। ध्यान दें गुरू वशिष्ठ की निकाली लगन के बावजूद राम–सीता वनवासी हुए। मनु महाराज ने मुहूर्त को काल (समय) की संज्ञा माना है। पलक झपकाना=निमेष, १८ निमेष=एक काष्ठा, ३० काष्ठा=एक कला, ३० कला=एकमुहूर्त और ३० मुहूर्त= एक दिन–रात। अब देखिये भरणी, भद्रा, पंचक, मूल सब हिन्दुओं के लिए है, मुसलमानों, ईसाइयों के लिए नहीं? आखिर भारत व उन्हीं अक्षांश–देशांतरों में हिन्दुओं के इतर जातियों में जन्म से लेकर सारे सामाजिक कार्य होते रहते हैं तो फिर शुभ–अशुभ का प्रभाव मात्र हिन्दू जाति पर ही क्यों? अन्य पर क्यों नहीं? उत्तर दें। हमारे पंडितों–ज्योतिषियों के अनुसार नवग्रह मंत्र हैं, "ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरांतकारी भानुः शशिः भूमिसुतौ बुधश्चौ। गुरूश्च शुक्रो शनि राहु–केतवः सर्वे ग्रहाः शांतिकरा भवन्तु।।' अब विचारे कि सारे विश्व के भूगोलवेत्ता, अंतरिक्ष विज्ञानी एवं विज्ञानवेत्ता आकाश मण्डल में प्रमुखतः दो प्रकार के पिण्ड मानते हैं – (१) नक्षत्रगण (२) पार्थिव पिण्ड समूह। पहले में स्व प्रकाशित पिण्ड (Luminus Bodies) तथा दूसरे में किसी स्व प्रकाशित पिण्ड से प्रकाशित (Non-Luminus Bodies) पार्थिव पिण्ड हैं। हमारे सौर मण्डल में सूर्य एक केन्द्रस्थ स्व–प्रकाशित तारा पिण्ड हैं जिसके आकर्षणबद्ध क्रमशः बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, गुरू, शनि, अरूण, वरूण, यम आदि नौ पार्थिव पिण्ड ग्रह हैं जो सूर्य से प्रकाशित हैं। चन्द्रमा आदि कई उपग्रह हैं। क्या इन मूर्ख पंडितों के पास इसके अतिरिक्ति कोई तर्क है? यदि है तो पूर्व उद्धत श्लोक की पुष्टि में कृपया अपना स्पष्टीकरण प्रस्तुत करें। हमारे सभी पौराणिक पंडितों द्वारा नवग्रह–पूजा के लिए उदबुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि' (यजुर्वेद/५/४) को बुध का, "शन्नो देवी रभीष्टय....'' (यजु०/३६/१२) को शनि का, कृण्वन्न केतवे.... (यजु० २९/३७)'' को केतु का मंत्र बताकर पूजा कराते हैं जबकि इनके वेद आधे अधूरे अल्पज्ञ पंडितों व पुरोहितों को यदि वास्तव में भूत–भविष्य–वर्तमान का ज्ञान है तो क्यों हमारे देश के लालबहादुर शास्त्री, इन्दिरागांधी, राजीव गांधी, संजय गांधी आदि कर्णधारों को नहीं बचाया गया। जब नियति व कर्मफल ही जीवन–मृत्यु का शाश्वत विधान है तो फिर इन धूर्त व पाखण्डियों की फलित ज्योतिष से हमारे देश को क्या लाभ हो रहा है? राजाओं, शासकों का उत्थान–पतन होता रहा है। मुझे याद नहीं नहीं आ रहा है कि किसी फलित ज्योतिषी की भूमिका से अमुक राजा पतन से बच गया। चलों अब तक न सही, वर्तमान में आतंकवाद का अंत करने के लिए कौन कारगर नुस्खें ये विद्वान, फलित ज्योतिष अपने देश की एकता अखण्डता के लिए देने जा रहे है।

अहार शुद्धौ सत्त शुद्धि

- साभार

ईशा वास्यमिद् सर्वं यत्किञ्ज जगत्याँ जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

–ईशावास्योपनिषत् १

अर्थात्– अखिल विश्व में जड़ चेतन स्वरूप जो कुछ भी है वह सर्वव्याप्त ईश्वर से परिपूर्ण है। इस संसार में जो कुछ भोग है, उसे समर्पित कर भोगो। लालच न करो, यह तन तुम्हारा नहीं है।

मनुष्य में एक बहुत बड़ी कमजोरी है यह है कि उसे प्राप्त का अभिमान हो जाता है। यह घर मैंने बनाया है। यह खेत मेरे हैं। इतना धन मैंने कमाया है। मैं इस सम्पत्ति का स्वामी हूँ, जो चाहे करूं, जैसा चाहूँ बरतूँ। इसे अहंकार कहते हैं। कहते हैं अहंकार करने वाले का विवेक नहीं रहता और वह बुद्धि–भ्रष्ट होकर नष्ट हो जाती है। अभिमानी व्यक्ति की भावनायें बड़ी संकीर्ण होती हैं। दूर तक सोचने की उसमें क्षमता न होने से वह अज्ञानियों के काम करता और दुःख भोगता है। इसलिये उसके लिए यह मंगलमय विश्व भी दुःखरूप हो जाता है। वह क्लेश में जीता और क्लेश में मर जाता है।

आप प्रतिदिन भोजन करने बैठते हैं। उस समय स्वाद की जल्दी में आप यह नहीं सोचा करते कि यह आहार किसने प्रदान किया है। कदाचित् आप से कोई यह प्रश्न पूछे तो आप कहेंगे–यह अन्न मैंने पैदा किया, मेरी धर्मपत्नी ने बनाया। बस यह सब मेरा है इसमें किसी का राई–रत्ती अधिकार नहीं, जैसा चाहूँगा वैसे भोगूंगा।

आपका इस प्रकार सोचना मिथ्या है। माना आपने श्रम किया, तो उसके बदले ही तो भोगने जा रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी ने बनाया है, इसीलिए तो आपकी इच्छानुसार बना है। पर आप थोड़ा ऊँचे उठकर विचार किजिए कि आपके इस अन्न में सृष्टि के नियामक परमात्मा का अधिकार भी है। उसने धरती न बनाई होती तो आप अन्न कहां उगाते? बीज न बनाया होता तो क्या पैदा कर लेते? फिर कहीं आपका ही अस्तित्व न होता, यह मनुष्य शरीर न मिला होता तो इसे भोगने की सामर्थ्य आप में कहाँ से आती? आपको भोग के साधन प्रदान किये गये हैं तो उस दाता के प्रति आपको कृतज्ञ भी तो होना चाहिये।

भोजन करने से पूर्व आप उसे परमात्मा को समर्पित कर दिया करें, तो इसमें आपका घटेगा कुछ नहीं वरन् अन्न की शक्ति के साथ भावना बल भी बढ़ेगा। आपको शक्ति और ओज प्रदान करने में इस प्रकार की भावना की महत्ता अद्वितीय है।

जो भोजन आप ग्रहण करते हैं उसी के द्वारा आपका पोषण और नव निर्माण नहीं होता, प्रत्युत भोजन करते समय आपकी जैसी मनः स्थिति होती है, मन जैसा सूक्ष्म प्रभाव फेंकता है और जैसी भावनायें लेकर भोजन करते हैं उनका भी आपके जीवन निर्माण से महत्वपूर्ण सम्बन्ध होता है। उन भावनाओं का विकास शरीर के रक्त, माँस, वीर्य और प्राण के द्वारा प्रस्फुटित होकर सारे जीवन में बिखर जाता है। परमात्मा को भोजन समर्पित करने से जो सात्विक और पवित्र विचार–प्रवाह उमड़ता है वह अपने शरीर और जीवन में घुल जाता है। शरीर पुष्ट और बलिष्ठ बनता है। साथ में संकल्प मजबूत होते हैं और उस निश्चयात्मक बुद्धि से बनने वाला जीवन–क्रम भी अधिक सुव्यवस्थित बन पड़ता है।

प्रातःकाल से लेकर दोपहर तक काम करने में आपके सामने अनेक प्रकार की परिस्थितियां आती हैं। कभी क्रोध उत्पन्न होता है, कभी खिन्नता आती हैं। कभी भय पैदा होता है, कभी निराशा उत्पन्न होती है। अनेक तरह के बुरे विचार भी प्रभावित करते रहते हैं। काम की कठोरता में उत्तेजना, उद्विग्नता, ईर्ष्या, द्वेष पैदा होना स्वाभाविक–सा है। माँस, मिर्च मसालेदार गरिष्ठ पदार्थ, प्याज और इसी तरह के अन्य दूषित पदार्थों का सेवन वही लोग करते हैं जो परमात्मा को अपने अन्दर धारण नहीं करना चाहते। इसी के फलस्परूप उन्हें स्वास्थ्य का सुख नहीं मिलता, भावनाओं का सुख नहीं मिलता।

आहार का उद्देश्य मन को, स्वादेन्द्रिय को तृप्त करना मात्र नहीं, वरन् उसका जीवन की गतिविधियों से गहरा सम्बन्ध है। जिस व्यक्ति का जैसा भोजन होगा उसका आचरण भी तदनुकूल होगा। आहार शुद्धि की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुये छान्दोग्य उपनिषद में लिखा है–

"आहार शुद्धौ सत्व शुद्धिः सत्व शुद्धो ध्रुवा स्मृतिः, स्मृतिलाभे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः।

अर्थात– आहार की शुद्धि से सत्व की शुद्धि होती है। सत्व की शुद्धि से बुद्धि निर्मल और निश्चयी बनती है। पवित्र और निश्चय बुद्धि के द्वारा ही मनुष्य मोक्ष प्राप्त करते हैं।

मनुष्य का पिता परमात्मा है। पिता की शक्ति और सामर्थ्य माता से बढ़कर होती है। अपने पुत्र की भावनाओं को देखकर उसका जी भर आता है, तब वह अपने शिशु को अपनी भावनाओं का रस उसी तरह पिलाता है जैसे माता अपने बेटे को दूध पिलाती है। निर्लेप, भव्य और उत्तम मनः स्थिति सुन्दर स्वास्थ्य के लिए प्रथम आवश्यक तत्व है। भयपूर्ण, क्लान्त या उद्विग्न मनः स्थिति में भोजन करना आलस्य और रोग–शोक को निमन्त्रण देना है।

"जो कुछ भोजन आप लेते हैं वह पाचन के उपरान्त शरीर को एक भाग बन जाता है, उस भोजन के साथ जो कुछ सूक्ष्म विचार थे वे भी शरीर में बस जाते हैं। लोग समझते हैं खाद्य पदार्थ में शक्ति है इसलिये आहार की बाहरी सफाई पर तो ध्यान देते हैं किन्तु आन्तरिक स्वच्छता को उपेक्षित करते हैं इससे उत्तम स्वास्थ्य और निरोग शरीर की आकांक्षा नहीं सफल होती।'' यह शब्द थियोसोफिकल सोसाइटी के विद्वान सन्त लेडबीटर ने "वास्तु की आन्तरिक दशा'' नामक पुस्तक में लिखे हैं।

परमात्मा पूर्ण पवित्रता का प्रतीक है। जब वह भोजन में हमारे साथ बैठ जाता है तो सात्विकता की लहर दौड़ने लगती है। परमात्मा का प्रसाद पुष्टिदायक, मधुर स्वादिष्ट और थोड़ा होता है। प्रसाद–भावना से लिया हुआ आहार भी वैसा ही होना चाहिये। मीठा, स्वल्प, सात्विक और स्वादिष्ट। जिसके जीवन में अनेक बुराइयां धसीं है, अनेक मनोविकारों से जो ग्रस्त हैं उसे अपना जीवन सीधी राह पर लाने का प्रारम्भिक एक साधन आहार शुद्धि और परमात्मा को समर्पित कर भोजन लेना है। आहार में ईश्वरीय दिव्यता का समावेश होता है तो काम, क्रोध, उत्तेजना, चंचलता, निराशा, उद्वेग आदि बुराइयाँ दूर होती हैं। स्वास्थ्य, शक्ति और सौंदर्य बढ़ता है। यह मनुष्य का कर्त्तव्य भी है। जिस परमात्मा ने हमें यह अलौकिक भोग इस धरती में दिया है उसके प्रति समर्पण का भाव न रखें तो यह मनुष्य की धृष्टता होगी। उसे जो मिलता है, मिला है, वह परमात्मा की कृपा वश मिलता है। उनकी इस कृपा के प्रति कृतज्ञ होना हमारा प्रमुख कर्त्तव्य होना चाहिए।

मनु–स्मृति का महत्व

- महात्मा चैतन्यमुनि
महादेव, सुन्दर नगर
जिला–मण्डी, हिमाचल प्रदेश

महर्षि मनु हमारे इतिहास के ऐसे महानायक हैं जिन्होंने मानव जीवन की महत्ता को प्रकट करते हुए हमारे लिए ऐसे मूल्यवान सूत्र दिये जिन पर चलकर हम अपनी चतुर्दिक उन्नति करते हुए समाज और देश की उन्नति की दिशा में भी विधिवत् अग्रसर हो सकते हैं। उन्होंने धर्म की सही–सही व्याख्या करते हुए उसे व्यक्ति की व्यवहारिकता के साथ जोड़ने का भी स्तुत्य प्रयास किया है। इसीलिए मनु महारजा को संसार के समस्त बुद्धि जीवियों ने न केवल सराहा है, बल्कि उनके द्वारा दिए गए सूत्रों को मानव मूल्यों की स्थापना के लिए अत्यधिक उपयोगी तथा महत्वपूर्ण एवं अनुकरणीय माना है। इसे मानव जाति का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि कुछ लोगों ने अपनी अल्पज्ञता के कारण मनु महाराज द्वारा प्रस्तुत समाजिक एवं आध्यात्मिक नियमों और व्यवस्थाओं को गहराई से न समझकर उनका विरोध करना आरम्भ कर दिया है। आजकल बहुत ही उपहासात्मक तथा व्यंग्यात्मक शब्दों में 'मनुवाद' शब्द का प्रयोग कुछ लोगों द्वारा किया जाता है तथा अपने राजनैतिक या अन्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मनु के बारे में अनेक प्रकार की भ्रान्तियां फैलाकर व्यक्ति–व्यक्ति में विद्वैष की भावना पैदा करने का षड्यन्त्र रचा जा रहा है। पाठकों की जानकारी के लिए हम मनुवाद शब्द का अर्थ प्रस्तुत कर रहे हैं, ताकि वे इस तथ्य से परिचित हो सकें कि क्या यह शब्द *वास्तव में ही इतना हेय और त्याज्य है?* मनुवादी व्यवस्था का अर्थ है– 'गुण–कर्म–योग्यता के श्रेष्ठ मूल्यों के महत्व पर आधारित विचारधारा के अनुरूप व्यवस्था' और गैरमनुवादी व्यवस्था का अर्थ है–'अगुण–अकर्म, अयोग्यता के अश्रेष्ठ मूल्यों पर आधारित विचारधारा के अनुरूप व्यवस्था' और गैरमनुवादी व्यवस्था का अर्थ है–'अगुण, अकर्म, अयोग्यता के अश्रेष्ठ मूल्यों पर आधारित व्यवस्था' अब यह बात अत्यधिक चिन्तनीय हो जाती है कि मनु का विरोध करने वाले आखिर समाज को कहां ले जाना चाहते हैं? जिन लोगों ने भी मनु का विरोध किया था किया जा रहा है उसका कारण मनु या उसके द्वारा प्रणीत मनुस्मति नहीं है, बल्कि मनुस्मृति जैसे अद्वितीय ग्रन्थ को जलाने और मनु महाराज की प्रतिमा तक हटवाने के कुप्रयास भी किए हैं, हालांकि इन कृत्यों से न तो मनु जी की प्रतिभा पर ही *कोई आंच आई है और न ही मनुस्मृति का महत्व* ही घटता है। मनुजी की प्रतिमा को हटाने के कुप्रयास पर तो न्यायालय द्वारा भी रोक लगा दी गई है। मनु की श्रेष्ठता और उनकी मूल भावना न समझ सकने के कारण ही उनके बारे में लोगों लोगों के मन में अनेक प्रकार की भ्रान्तियां फैलाने का षड्यन्त्र समय–समय पर किया जाता रहा है।

जो लोग मनु के दर्शन की गहराई तथा वास्तविक स्वरूप को समझ सकने की सामर्थ्य रखते हैं उनके द्वारा मनु महाराज को मानव मूल्यों तथा सामाजिक समरस्ता और श्रेष्ठता के सूत्र देने वाले प्रथम प्रवक्ता के रूप में आदर किया जाता है, इनके विचारों की उपयोगिता व श्रेष्ठता के बारे मं यहां तक कहा गया है– 'मनुर्वैयत्किंचावदत् तद् भैषजम्' (तै. सहिंता) अर्थात् मनु ने जो कुछ कहा है, वह मानवों के लिए भेषज–औषध के समान कल्याणकारी एवं गुणकारी है। हम देखते हैं कि संहिता ग्रन्थों, ब्राह्मण गन्थों, वाल्मीकि रामायण तथा महाभारत आदि ग्रन्थों ने मनु को प्रमाण माना है। आचार्य बृहस्पति जी ने तो यहां तक कहा है कि वेदार्थों के अनुसार रचित होने के कारण सब स्मृतियों में मनु स्मृति ही सबसे प्रधान एवं प्रशंसनीय है... मनु स्मृति के समक्ष सभी शास्त्र निस्तेज व प्रभावहीन प्रतीत होते हैं। महाभारत का कथन है कि ब्राह्मण ग्रन्थ, मनु प्रतिपादित धर्म, सांगोपांग चिकित्सक और धार्मिक विद्वानों की आज्ञा से सिद्ध कार्य इन चारों का हेतुशास्त्र का आश्रय लेकर कुतर्क आदि द्वारा खण्डन नहीं करना चाहिए, इसलिए ऐसे कुतर्की को मनुमहाराज भी निन्दा करने योग्य नास्तिक और श्रेष्ठजनों द्वारा बहिष्कृत करने योग्य कहते हैं। उनका कथन है कि श्रुति और स्मृति ग्रन्थों की किसी भी अवस्था में आलोचना नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उन्हीं से धर्म की उत्पत्ति हुई है जो व्यक्ति कुतर्क आदि का सहारा लेकर उनकी अवमानना व निन्दा करता है, श्रेष्ठ लोगों को चाहिए कि उसे समज से बहिष्कृत कर दे, क्योंकि वेद की निन्दा करने वाला ऐसा व्यक्ति नास्तिक है। महाकवि अश्वघोष, याज्ञवल्क्य, शंकराचार्य, शबरस्वामी, गौतम, वशिष्ठ आपस्तम्ब, आश्वलायन, जैमिनि, बोधायन तथा आचार्य चाण्क्य आदि महापुरूषों ने मनुस्मृति की श्रेष्ठता को एक स्वर से स्वीकार किया है, आधुनिक काल में महर्षि दयानन्द सरस्वती सहित समस्त आचार्यों तथा दार्शनिकों ने मनुस्मृति को धर्म का आधांर माना है।

अपनी गुणवत्ता के आधार पर मनुस्मृति का विदेश में भी पर्याप्त स्वागत हुआ है। इस सम्बन्ध में डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी लिखते हैं कि ब्रिटेन, अमेरिका तथा जर्मन से प्रकाशित– 'इन्साइक्लोपीडिया' में मनु को मानव जाति का आदि पुरुष आदि, धर्मशास्त्र आदि विधिप्रणेता आदि न्यायशास्त्री और आदि समाज व्यवस्थापक के रूप में वर्णित किया गया है। मैक्समूलर ए.बी. कीथ, लुईसरेना, पी. थामस तथा मैक्डानल पाश्चात्य लेखकों ने मनुस्मृति को धर्मशास्त्र के साथ–साथ लॉ–बुक मानते हुए उसमें नीहित विधान को सार्वभौमिक, सार्वकालिक और सबके लिए कल्याणकारी माना है। भारतीय सुप्रीमकोर्ट के तत्कालीन जज सर विलियम जोन्स ने तो भारतीय विवादों के निर्णय में मनुस्मृति की अपरिहार्यता को देखते हुए संस्कृत सीखी और मनुस्मृति को पढ़कर उसका सम्पादन किया। जर्मन के प्रसिद्ध दार्शनिक फ्रीडरिच नीत्ये ने तो यहां तक कहा है– 'मनु स्मृति बाईबल से उत्तम ग्रन्थ हैं, बल्कि उससे बाईबल का तुलना करना पाप है।' अमेरिका से प्रकाशित 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ दि सोशल साइंसिज', 'कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया' कीथ रचित– 'हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिट्रेचर', भारत रत्न पी.वी. काणे रचित– ' धर्मशास्त्र का इतिहास', डॉ. सत्यकेतु रचित– 'दक्षिण–पूर्वी और दक्षिण–एशिया में भारतीय संस्कृति' आदि पुस्तकों में विदेशों में मनुस्मृति के प्रभाव और प्रसार का जो विवरण दिया गया है। बाली द्वीप, बर्मा, फिलीपीन, थाईलैण्ड, चम्पा (दक्षिण वियतनाम), कम्बोडियन, इण्डोनेशिया, मलेशिया, श्रीलंका तथा नेपाल आदि देशों से प्राप्त शिलालेखों और उनके प्राचीन इतिहास से ज्ञात होता है कि वहां प्रमुखतः मनु के धर्मशास्त्र पर आधारित कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था रही है। मनु के विधानों को सर्वोच्च महत्व दिया जाता था और उन्हीं के अनुसार न्याय होता था।

देश–विदेश में मनु जी की मान्यताओं को इतने आदर और सत्कार के साथ माना जाता है, मगर इसके बावजूद भी कुछ लोग मनु जी का घोर विरोध क्यों करते हैं इस पर थोड़ा सा चिन्तन करना जरूरी है। भारत वर्ष की संस्कृति को हेय और त्याज्य सिद्ध करने का षड्यन्त्र सबसे अधिक अंग्रेजी राज में हुआ है। उन्होंने बड़ी ही चतुरता के साथ भारतीय संस्कृति की उत्कृष्टता को नीचा दिखाने तथा फूट डालो और राज करो की नीति को कार्यरूप देने के लिए वेद व स्मृतियों आदि में आपत्तिजनक बातें होने से चर्चा प्रमुखता से की और जाति–पाति व सम्प्रदायवाद की भावना को भारतीयों के ह्रदयों में गहराई के साथ बिठाने का प्रयास किया। ऐसा उन्हें इसलिए करना अपेक्षित था *ताकि भारतीयों को अपनी* संस्कृति व महापुरूषों के प्रति घृणा के भाव पैदा हो जाएं तथा हम उन्हें इसाईयत की ओर आकर्षित कर सके। दूसरे उन्हें भारतवासियों की आपसी एकता की भावना में सेन्ध लगाने का काम करना था। अन्ततः इसका मुख्य लक्ष्य अपनी सत्ता को चिरस्थाई बनाना ही था। महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे ऋषिकोटि के महापुरुष तो अंग्रेजों के इस षड्यन्त्र को बहुत पहले ही गहराई से पहचान गए थे तथा इसके निराकरण में मन–वचन–कर्म से जुट भी गए थे, मगर कुछ लोग अंग्रेजों की इस चाल को नहीं समझ सके और उन्हें अपनी संस्कृति व लोग ऐसे ही दिखाई देने लगे जैसा अंग्रेजों ने अपने हाथ में लिए शीशे में उन्हें दिखाया। स्वतन्त्रता के बाद भी कुछ लोगों की मानसिकता वैसी ही रही और ऐसे लोगों ने अपने राजनैतिक व सामाजिक लाभ उठाने के लिए मनुवादी और गैरमनुवादी नाम से भारतीयों को बांटने का प्रयास किया। अब क्योंकि उन्हें अपनी इस कुत्सित भावना को एक *विशाल फलक व* आधार देना था, इसलिए वेद व मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में दोष निकाले जाने का प्रयास किया गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि मनुस्मृति का विरोध पूर्वाग्रहों, राजनैतिक व अन्य सामाजिक स्वार्थों तथा मनु की मूल भावना को न समझने के कारण हुआ है। इसके साथ ही विरोध करने वालों ने मनुस्मृति का स्वयं गहन अध्ययन नहीं किया, बल्कि उसे मात्र सतही तौर पर ही देखा तथा लोगों से सुनी–सुनाई बातों पर विश्वाश कर लिया।

कुछ लोगों ने शूद्रों आदि के प्रति समसामयिक विषमताओं को देखकर तथा

शेष पृष्ठ ६ पर

पृष्ठ ५ का शेष

मनु–स्मृति का....

इसका दोष मनुस्मृति पर मढ़कर घोर प्रतिक्रियावादी बनकर मनुस्मृति का विरोध किया है। श्री फूले जी अपनी पुस्तक 'गुलामगिरि' में ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीत् पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं कि ब्राह्मण को मुख से जन्म देने वाला ब्रह्मा का मुख ऋतु (अवतार) काल में चार दिन अलग–अलग बैठता था। या भस्म लगाकर घर के कामकाज करता था, इस विषय में मनु ने कुछ लिखा है या नहीं। 'ब्राह्मण को यदि व्यक्ति का मुख (श्रेष्ठ) होने की उपमा दे दी तो इतनी सी बात तो फूले जी को समझनी ही चाहिए थी कि मुंह से किसी व्यक्ति का जन्म नहीं होता है, यह तो ग्रन्थकार ने ब्राह्मण की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए उपमा दी है। श्री अम्बेडकर जी मनु जी द्वारा विवेचित ब्राह्मण और शूद्र की परिभाषा की गहनता व गुणवत्ता को न समझने के कारण ही इस प्रकार की अजीब बात कहते हैं कि – 'ब्राह्मण को शूद्र के स्थान पर बिठलाया जाएगा, तभी मनु प्रणीत निर्लज्ज तथा विकृत मानवधर्म का निवारण हो सकता है।' यदि अम्बेडकर जी ब्राह्मण और शूद्र का सही भाव समझते तो वे कहते कि हमें शूद्र की ब्राह्मण बनाने का प्रयास करना अपेक्षित है।

आर्य समाज का यही दृष्टिकोण रहा है कि सत्य को जानने के लिए अध्ययन–अध्यापन तथा प्रेमपूर्वक संवाद की परम्पराओं को चलाया जाए, अन्यथा इस प्रकार के विषवमन से आज मानव–मानव में जो दुराव और कटुता की भावना प्रश्रय पा रही है, इससे किसी का भी भला होने वाला नहीं है। डॉ. मदनमोहन मालवीय जी अपनी इस व्यथा को आर्य जगत् जनों से इस प्रकार व्यक्त करते हैं–

'धर्मशास्त्रकार, विधिप्रणेणा तथा वेदानुमोदि स्मृति प्रदाता महर्षि मनु पर पंक उठालने वाले लोग न राजनीत न अम्बेडकरवादी बौद्धमत और न ही दलितों का कोई भला कर रहे हैं। मनु की मूर्ति हटाने एवं उसके स्थान पर अम्बेडकर की मूर्ति लगाने की मांग हठधर्मिता एवं अलोकतांत्रिक की परिचायक है। न्यायालय में मनु ही क्या राम, कृष्ण, शंकराचार्य, बुद्ध, महावीर, अम्बेडकर की भी मूर्तियां लगे पर खेद है कि दलितों के नमा से निर्मित दलों एवं राजनीतिज्ञ दलों ने 'दलित वोट बैंक' को हथियाने के लोभ में सवर्ण हिन्दुओं को अममानित करने का कुचक्र रचा है, जिसमें प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से साम्यवादी तथा मुस्लिम संगठन भी शामिल हो गए हैं। हमारी दृष्टि में राजनैतिक व्यूह रचकर भोले–निर्धन हिन्दुओं और तथाकथित दलितों को बहकाने का मार्ग त्यागकर इन तथाकथित दलित नेताओं को शुद्ध क्तदय से विशुद्ध मनुस्मृति का अध्ययन करना चाहिए। स्थान–स्थान पर मूर्तियों के अम्बार लगाने की अपेक्षा उस शक्ति को शास्त्राध्ययन की परिपाटी में लगाना ज्यादा जरूरी है।'

हमारे दृष्टिकोण में मनुस्मृति को जलाना, मनु की निन्दा करना या उनकी मूर्ति आदि हटाना दलितों की स्थिति को संवारने की दिशा में कोई समाधान नहीं है, बल्कि इससे समाजिक समरसता और व्यवस्था के और अधिक चरमराने की संभावना है। इसका समाधान यह है कि हम मनुस्मृति की उस आदर्श वर्ण व्यवस्था को मूलरूप से समझें एवं उसा कार्यवन्यन पूरी ईमानदारी के साथ करें, कहीं भी किसी बात पर विवाद हो तो उसे सप्रेम बातचीत के द्वारा हल किया जाए। दुःख की बात है कि इस दिशा में किसी भी तथाकथित दलितों के मसीहा कहलाने वाले ने प्रयास नहीं किया। मनु जी के प्रति श्री अम्बेडकर जी के दृष्टिकोण के बारे में डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी लिखते हैं....' यद्यपि जन्मना जाति–पाति, ऊंच–नीच, छूत–अछूत जैसी कुप्रथाओं के कारण अपने जीवन में उन्होंने जिन उपेक्षाओं, असमानताओं और अन्यायों को भोगा था, उस स्थिति में कोई भी स्वाभिमानी शिक्षित वही करता जो व्यवहार किया, वह भी सर्वथा अनुचित एवं अन्यायपूर्ण था। एक कानूनविद् होने के नाते उन पर इस अनौचित्य की जिम्मेदारी अधिक आती है। उन्होंने संविधान में प्रावधान किया है कि अनुचित निर्णय से निरपराध को दण्ड नहीं मिलना चाहिए चाहे अपराधी मुक्त हो जाए, किन्तु उन्होंने अपने जीवन में इसका पालन नहीं किया। परवर्ती समाज द्वारा बनाई गई जन्माधारित सामाजिक व्यवस्थाओं को मनु पर थोंपकर अनावश्यक रूप से उन्हें दोषी घोषित करते रहे और उनके विरुद्ध निन्दा अभियान चलाते रहे, आर्य (हिन्दू) समाज में प्रतिष्ठित एक महर्षि के लिए बेहद कटु वचनों का प्रयोग करते रहे, हालांकि तत्कालीन बहुत से व्यक्ति उनका ध्यान बार–बार इस तथ्य की ओर आकर्षित करते रहे कि मनु के विषय अभी उनकी कुछ भ्रान्तियां और पूर्वाग्रह हैं, वे उन्हें दूर कर लें किन्तु वे पूर्वाग्रहों पर अड़े रहे। उसके कई कारण थे जो कुछ तब वे मनु के विषय में लिख चुके थे, शायद उसको नहीं छोड़ना चाहते थे और उन्हीं के शब्दों में 'उन पर मनु का भूत सवार था और उनमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वे उसे उतार सकें।' सत्य है वे उस भूत को जीवन पर्यन्त नहीं उतार सके और जीवन के उपरान्त उसे अपने अनुगामियों पर छोड़ गए, लेकिन 'क्या भूत सवार होना' सामान्य स्थिति–संतुलित विचार, विवेकपूर्वक सही समीक्षा का परिचायक माना जा सकता है? यह भी उनके जीवन की वास्तविकता है कि वे संस्कृत के ज्ञाता नहीं थे, जैसा कि उन्होंने स्वीकार किया है, उन्होंने मनु सम्बन्धी समस्त अध्ययन–विश्लेषण अंग्रेजी भाषा में लिखी आलोचनाओं के माध्यम से ग्रहण किया है, अतः वे मौलिक–प्रक्षिप्त आदि पहलुओं, श्लोकों के प्रसंगों आदि पर विचार नहीं कर सके जो अंग्रेजी समलोचनाओं में पढ़ा, वही धारणाएं बन गई, अन्यथा वे मनु और मनु स्मृति का इतना अविचारित विरोध नहीं करते।'

इस बात का कोई एक भी प्रमाण नहीं दे सकता है कि मनु जी ने शूद्र को कहीं पर भी अस्पृश्य नहीं दे सकता है कि मनु जी ने शूद्र को कहीं पर भी अस्पृश्य कहा हो। इसके विपरीत उन्होंने शूद्र को निन्दित व घृणित मानने के स्थान पर उसे शुचि, उत्तम तथा उत्कृष्ट आदि शब्दों से सम्बोधित किया है। उन्होंने अपराधों के लिए ब्राह्मण को सबसे अधिक दण्ड तथा शूद्र को सबसे कम दण्ड देने का विधान किया है। उसे गुलाम व दास आदि न मानकर उसे पूरा वेतन देने का भी आदेश दिया है। पता नहीं क्यों और कैसे राजनैतिक आधार पर अछूत, दलित, पिछड़ी और जनजाति आदि के लिए शूद्र शब्द का प्रयोग किया जाने लगा है, जबकि मनु जी ने शूद्र को इस कोटी में नहीं रखा है। कुछ लोगों ने अपने पूर्वाग्रहों, अधकचरे अध्ययन तथा राजनैतिक एवं सामाजिक लाभ उठाने के लिए मनु पर मनमाने आरोप लगाने का अपराध किया है। हमारा यह निवेदन है कि जाति के नाम पर घृणा, द्वेष और अलगववाद के बीज बोने के स्थान पर मनु महाराज की व्यवहारिक व वैज्ञानिक आदर्श वर्णव्यवस्था को समझना चाहिए और समाजिक विद्वैष को समाप्त करने हेतु उसका ईमानदारी से प्रचार–प्रसार व क्रियान्वयन करने की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए। कुछ पढ़े–लिखे लोग जब स्वयं भ्रमित होकर पूर्वाग्रहों के दायरे में रहकर किसी व्यवस्था को गलत ढंग से समाज में रखते हैं तो जनसाधारण बहुत दूर–दूर तक भटक जाता है। इस भटकाव से व्यक्ति का अपना अहित तो होता है मगर समाज और राष्ट्र को भी इसका बहुत अधिक खामियाजा भुगतना पड़ता है।

हैप्पी पितृपक्ष

– रमेश कुमार निर्मेश

चूहा अगर हो पत्थर का हो
तो उसे गणेश के साथ
सब लड्डू खिलाकर पूजते हैं।
वही घर में यदि दिख जाय
तो सल्फास की गोली लिए
उसके पीछे पड़े रहते हैं
पत्थर के सांप को
शिव के साथ सब दूध
पिलाकर पूजते हैं
पर सच में जो सांप सामने
पड़ जाये तो
बिना वक्त गवाए उसे मारने का
हर उपक्रम करते है
वैसे ही तस्वीरों में सजे
मां बाप सबको अच्छे लगते है
ड्राइंग रूम में सजा उसे सब
बड़े प्रेम से पूजते
पर हकीकत में उनकी कीमत
जिन्दा रहते हम कब
समझते हैं।
समझ में नहीं आता
जिन्दों से ऐसे नफ़रत और
पत्थरों से प्रेम का अर्पण
जिन्दा पर जिन्हें जलालत की
दी जिन्दगी निर्मेश
आज मारने पर करते हो
उनका श्राद्ध और तर्पण

महान बलिदानी–बंदा बैरागी–जन्म दिवस 27 अक्टूबर

आज बन्दा बैरागी का दिवस है। कितने हिन्दू युवाओं ने उनके अमर बलिदान की गाथा सुनी है? बहुत कम। क्यूंकि वामपंथियों द्वारा लिखे गए पाठयक्रम में कहीं भी बंदा बैरागी का भूल से भी नाम लेना उनके लिए अपराध के समान है। फिर क्या वीर बन्दा वैरागी का बलिदान व्यर्थ जाएगा? क्या हिन्दू जाति अपने पुर्वजों का ऋण उतारने के लिए संकल्पित होगी?

इस लेख के माध्यम से जाने बंदा बैरागी के अमर बलिदानी की गाथा। महामानव बन्दा बैरागी का जन्म २७ अक्टूबर, १६७० को ग्राम तच्छल किला, पुंछ में श्री रामदेव के घर में हुआ। उनका बचपन का नाम लक्ष्मणदास था। युवावस्था में शिकार खेलते समय उन्होंने एक गर्भवती हिरणी तर तीर चला दिया। इससे उसके पेट से एक शिशु किला और तड़पकर वहीं मर गया। यह देखकर उनका मन खिन्न हो पाया। उन्होंने अपना नाम माधोदास रख लिया और घर छोड़कर तीर्थयात्रा पर चल दिये। अनेक साधुओं से योग साधना सीखी और फिर नान्देड़ में कुटिया बनाकर रहने लगे।

इसी दौरान गुरू गोविन्द सिंह जी माधोदास की कुटिया में आये। उनके चारों पुत्र बलिदान हो चुके थे। उन्होंने इस कठिन समय में माधोदास से वैराग्य छोड़कर देश में व्याप्त मुस्लिम आतंक से जूझने को कहा। इस भेंट से माधोदास का जीवन बदल गया। गुरूजी ने उसे बन्दा बहादुर नाम दिया। फिर पांच तीर, एक निशान साहिब, एक नगाड़ा और एक हुक्मनामा देकर दोनों छोटे पुत्रों को दीवार में चुनवाने वाले सरहिन्द के नवाब से बदला लेने को कहा।

बन्दा हजारों सिख सैनिकों को साथ लेकर पंजाब की ओर चल दिये। उन्होंने सबसे पहले श्री गुरू तेगबहादुर जी का शीश काटने वाले जल्लाद जलालुद्दका सिर काटा। फिर सरहिन्द के नवाब वजीरखान का वध किया। जिन हिन्दू राजाओं ने मुगलों का साथ दिया था, बन्दा बहादुर ने उन्हें भी नहीं छोड़ा। इससे चारों ओर उनके नाम की धूम मच गयी।

उनके पराक्रम से भयभीत मुगलों ने दस लाख फौज लेकर उन पर हमला किया और विश्वासघात से १७ दिसम्बर, १७१५ को उन्हें पकड़ लिया। उन्हें लोहे के एक पिंजड़े में बन्दकर, हाथी पर लादकर सड़क मार्ग से दिल्ली लाया गया। उनके साथ हजारों सिख भी कैद किए गए थे। इनमें बन्दा के वे ७४० साथी भी थे, जो प्रारम्भ से ही उनके साथ थे। युद्ध में वीरगति पाए सिखों के सिर काटकर उन्हें भाले की नोक पर टांगकर दिल्ली लाया गया। रास्ते भर गर्म चिमटों से बन्दा बैरागी का मांस नोचा जाता रहा।

काजियों ने बन्दा और उनके साथियों को मुसलमान बनने को कहा, पर सबने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। दिल्ली में आज जाहं हार्डिंग लाइब्रेरी है, वहां ७ मार्च, १७१६ से प्रतिदिन सौ वीरों की हत्या की जाने लगी। एक दरबारी मुहम्मद अमीन ने पूछा–तुमने ऐसे बुरे काम क्यों किये, जिससे तुम्हारी यह दुर्दशा हो रही है? बन्दा ने सीना फुलाकर सगर्व उत्तर दिया– मैं तो प्रजा के पीड़ितों को दण्ड देने के लिए परमपिता परमेश्वर के हाथ का शस्त्र था। क्या तुमने सुना नहीं कि जब संसार में दुष्टों की संख्या बढ़ जाती है, तो वह मेरे जैसे किसी सेवक को धरती पर भेजता है। बन्दा से पूछा गया कि वे कैसी मौत मरना चाहते हैं? बन्दा ने उत्तर दिया, मैं अब मौत से नहीं डरता, क्योंकि यह शरीर ही दुःख का मूल है। यह सुनकर सब ओर सन्नाटा सा छा गया। भयभीत करने के लिए उनके पांच वर्षीय पुत्र अजय सिंह को उनकी गोद में लेटाकर बन्दा के हाथ में छुरा देकर उसको मारने को कहा गया।

बन्दा से इससे इन्कार कर दिया। इस पर जल्लाद ने उस बच्चे के दो टुकड़ेकर उसके दिल का माँस बन्दा के मुंह में ठूंस दिया, पर वे तो इन सबसे ऊपर उठ चुके थे। गरम चिमटों से मांस नोचे जाने के कारण उनके शरीर में केवल हड्डियां शेष थी। फिर ६ जून, १७१६ को उस वीर को हाथी से कुचलवा दिया गया। इस प्रकार बन्दा वीर बैरागी अपने नाम के तीनों शब्दों को सार्थक कर बलिपथ पर चल दिये।

बंदा बैरागी जैसे महान वीरों ने हमारे धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। खेदजनक बात यह है कि उनकी बलिदान से आज की हमारी युवा पीढ़ी अनभिज्ञ है। यह एक सुनियोजित षड़यंत्र है कि जिन–जिन महापुरूषों से हम प्रेरणा ले सके उनके नाम तक विस्मृत कर दिए जाये।

पृष्ठ १ का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन भव्यता....

नामोल्लेख सम्भव नहीं है। सबसे प्रभावशाली कार्यक्रम सामूहिक यज्ञ परम्परा का रहा – यज्ञशाल प्रकार–प्रकार की रहीं १. निरन्तर यज्ञ चलने वाली, २. प्रातः सायं यज्ञ करने के लिए, ३. १० हजार यज्ञ कुण्डों में एक साथ यज्ञ करके विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है श्री सत्यानन्द जी आर्य प्रधान आर्य समाज पंजाबी बाग एवं गुरूकुल पूठ इस व्यवस्था के अध्यक्ष रहे श्री सतीश चड्ढ़ा मन्त्री आर्य समाज कीर्ति नगर इसके संयोजक रहे। इसी प्रकार भोजन व्यवस्था भी ३ स्थानों पर व्यवस्थित रही जिसका संचालन आर्य समाज सी० ३ जनकपुरी दिल्ली कर रही थी। प्रदर्शनी पाण्डाल तथा ६ पाण्डाल शंका समाधान के लिए बनाये गए थे। विभिन्न व्यवस्थाओं के लिए कार्यालय बने थे योगसाधना शिविर श्री ओमप्रकाश जी योगीद्वारा पृथक मैदान था एवं सामूहिक आर्यवीरदल के वीर–वीरांगनाओं का व्यायाम प्रदर्शन हेतु पृथक से मैदान था सभी भरे रहते थे सभी लोग व्यायाम प्रदर्शन की प्रशंसा कर रहे थे मुख्य रूप से कन्यागुरूकुल चोटी पुरा, लोवाकलां, खरल एवं अन्य गुरूकुल थे इसी प्रकार गुरूकुल कुरु क्षेत्र–भादस, झज्जर के अलावा गुरूकुल पूठ जैसे बहुत गुरूकुल छोत्रों सहित पधारे थे सभी का सामूहिक व्यायाम प्रदर्शन भी हुआ विशेष भी हुआ इसका संयोजन व्यायाम शिक्षक गुरूकुल कुरूक्षेत्र कर रहे थे। आवास व्यवस्था भी सुन्दर थी प्रवेश व्यवस्था प्रभावशाली थी। सब मिलाकर सम्मेलन के केन्दबिन्दु म० धर्मपाल जी एम.डी.एच. ही रहे। पंजीकरण करने वाले समर्पित कार्यकर्ता थे किसी कोक भी परेशानी नहीं होने दी उत्तर प्रदेश से भी भारी संख्या में आर्य महानुभाव पधारे थे मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हमारे निवेदन पर लगभग ३०–४० हजार आर्यों ने वहां पहुंचकर अपने संगठन का परिचय दिया है। आपकी निष्ठा के प्रति मैं बारम्बार आपका आभार व्यक्त करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की ओर से सधन्यवाद प्रदान करना अपना उचित कर्त्तव्य समझता हूँ भविष्य में आप इसी प्रकार सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपका अपना ही–

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभामंत्री

ओ३म्

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीरामचन्द्र योगीराज श्रीकृष्ण

मान्यवर,

सादर नमस्ते

कानपुर महानगर में प्रथम बार आगमन भारत के प्रसिद्ध विद्वान अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक कथाकार प्रवक्ता तपोनिष्ठ ***स्वामी धर्मबन्धु जी महाराज*** प्रांसला राजकोट गुजरात से तथा सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक ***भानु प्रकाश जी शास्त्री*** बरेली से पधार रहे हैं।

स्थान : नवशील धाम फेज 2 कल्यानपुर

समय : प्रातः 8 से 11.30 प्रतिदिन

सायं 5.30 से 9 प्रतिदिन

16, 17, 18 नवम्बर 2018

तदनुसार मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी, नवमी, दशमी

विशेष आकर्षण :

1. विश्व कल्याण हेतु महायज्ञ का आयोजन
2. विद्यार्थियों की सफलता हेतु विशेष सत्र का आयोजन
3. मातृ पितृ भक्त तथा चरित्रवान संतान निर्माण के उपाय
4. व्यसनों से दूर रहने तथा स्वस्थ रहने के उपाय
5. जीवन उत्थान के लिए संगीतमयी प्रस्तुति

जीवन को बदल देने वाले मार्गदर्शन के लिए सपरिवार एवं ईष्टमित्रों के साथ आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

आयोजक : सुखवीर शास्त्री, धर्माचार्य, अंधेरी मुम्बई 9821702370, 8779270868

सहयोगी : जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कानपुर महानगर

विशेष सहयोग : विनोद कुमार आर्य, प्रतिष्ठित सदस्य, जिलासभा 8765193154, 7985422247

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०९४१२७४४३४१, मंत्री- ०९८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 दिल्ली के कार्यक्रम की झलकियां

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।